# भगवत् कृपा

# THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

| | | |
|---|---|---|
| वर्ष 20 अंक : 7 | सम्पादक : **प्रभाकर राव** | वार्षिक चंदा : 50.00 |
| शनिवार 26-7-97 | जुलाई-1997 | प्रति अंक : 5.00 |


## आईये—
## स्वातन्त्र्य ज्योति लेकर चलें....

### ‘अखंड धरा पर प्रगट रहूँगा, भारत पर आशिष बरसाए......’

भगवान स्वामिनारायण का अपने आश्रितों पर विशेष अनुग्रह है कि उन्होंने–

‘अपने संतों द्वारा भारत की भूमि पर अखंड रहने का वरदान दे दिया.......’

सो, आईये–

एक भारतीय होने का गौरव व्यक्त करने प.पू. गुरुजी के दिव्य सान्निध्य में

आज़ादी की सुवर्ण जयंती की पूर्वसंध्या पर

यानि–**14 अगस्त ’97 सायं–ठीक 7.00 बजे**

सपरिवार–मित्रमंडल सहित ‘स्वामिनारायण’ धून व भजन करते हुए

**स्थानीय मशाल यात्रा में शामिल हों.......**

**–योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली**

**स्थान:** ‘अनिर्देश’, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोक विहार-III, दिल्ली-110 052

# भारत की आज़ादी की सुवर्णजयंती—इतिहास के पन्नों पर!!!

## अपनी आज़ादी को हम हर्गिज़ भूला सकते नहीं, सर कटा सकते हैं लेकिन सर झुका सकते नहीं.....

अहो ! '1997'—यानि? **मादरे वतन—**'हमारे भारत' की आज़ादी का अर्धशताब्दी वर्ष ! 15 अगस्त नज़दीक आ रहा है। हमें आज़ाद हुए इस दिन पूरे पचास वर्ष हो जाएंगे.... यह शुभ दिन-जब कई कुर्बानियाँ देकर गुलामी की जंजीरों से हमने मुक्ति पाई.... तब के हालात—जोश सुनकर आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं—कलेजा कांप उठता है।कई सुहागनों के सुहाग गये, कई माँओं की गोद उजड़ी, कई बहनों ने अपना इकलौता भाई गँवाया.... देश प्रेम के सामने किसी ने अपना कुछ अधिक नहीं रखा....धन्य है उनकी कुर्बानी जो शहीद हुए हैं—जिन्होंने हमें आज़ादी की खुली सांस दिलवाई.... उन शहीदों की कुर्बानी याद करके आज भी मस्तिष्क व दिल श्रद्धा और भक्ति से झुक जाता है ! और.... भारतीय होने के नाते आज हम एक अनोखे गौरव का अनुभव करते हैं....

यूं तो भारत की भूमि ऋषि मुनियों, राम-कृष्ण जैसे अवतारों की जन्मभूमि रही है.... और भारत का यह परम सौभाग्य है कि भगवान स्वामिनारायण ने भी मानव स्वरूप में अवतरित होने भारत की भूमि ही पसंद की..... इससे भी अधिक इनके अनुग्रह से गुणातीत ज्योतिर्धरों द्वारा आज भी भारत की भूमि सनाथ रही है.....

प.पू. काकाजी महाराज ने बात करते हुए कई बार बताया है कि गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज का अद्‌भुत सामर्थ्य सुनकर 14 अगस्त 1922 को कई स्वांतत्र्य सेनानियों के साथ महात्माजी आज़ादी की प्रार्थना लेकर गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज के पास गए थे.... गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज तो अखंड प्रभुधारक-अत्यधिक तेजस्वी विभूति.... पहली बार तो गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने कह दिया कि इस देश को आज़ादी मिलनी मुश्किल है। पर फिर सब की अत्यधिक विनयभरी प्रार्थना से पिघल कर गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने कौने में बैठे गुरुहरि योगीजी महाराज की ओर उंगली दिखा कर कहा—**'ये योगीजी महाराज नैष्टिक ब्रह्मचारी हैं—वह रोज़ 11 माला करेगा, उसके फलस्वरूप 25 साल बाद देश को आज़ादी मिलेगी.....'**

इस बात को शायद ही किसी ने ध्यान से सुनी होगी या तो उसकी गहराई समझ भी पाया होगा.... पर गुरुहरि योगीजी महाराज तो गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज की आज्ञा में हमेशा तत्पर..... कभी भी अपने गुरु का एक अल्प वचन भी उन्होंने नीचे नहीं गिरने दिया.... गुरुहरि योगीजी महाराज ने तो उसी दिन से माला फिरानी शुरु कर दी। और.... उसी भजन के फलस्वरूप हमें आज़ादी हॉसिल हुई ! (यह सारी बात प.पू. काकाजी के पिताश्री डॉ. नाथाभाई की डायरी में लिखी हुई है—जिसका ज़िकर प.पू. काकाजी ने कई बार किया भी है....)

इसी प्रसंग को प.पू. काकाजी महाराज ने एक बार मुंबई—कपोलवाड़ी में गुरुहरि योगीजी महाराज की हाज़िरी में दोहराया था, तब प.पू. बापा अपना ऊपरी वस्त्र गद्दी पर पटकते हुए लाक्षणिक शैली में बोले भी—'कोण भोजियो माने छे?' यानि-इस बात का कौन यकीन करता है? और..... यह बात जगत के जीवों के लिए है भी नहीं, बल्कि निष्ठा वाले भक्तों के लिए है..... गुरुहरि योगीजी महाराज की कैसी छुपी भक्ति और अपने गुरु के वचन की ओर कैसी एकधारी नज़र होगी व देश के प्रति भी छुपे प्रेम का कैसा आदर्श उन्होंने रखा !

और..... **देश की आजादी की अर्धशताब्दी का यह वर्ष तो सारे स्वामिनारायण सम्प्रदाय के लिए गौरव का विषय बन गया.....** ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज के लाडले—गुरुहरि योगीजी महाराज के परम कृपापात्र एवं गुणातीत समाज के आद्य सर्जक प.पू. काकाजी महाराज के परम सखा स्वरूप स्वाधीनता सेनानी—गांधीवादी नेता **श्री गुलज़ारीलाल नंदाजी** जिन्हें 1948 में गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति देते हुए आशीर्वाद दिए थे कि 'जाओ—दिल्ली की गद्दी पर बैठोगे और स्वामिनारायण का संदेश फैलाना.....' सुनकर सब हँस पड़े ! तब गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज बोले—'क्या हँस रहे हो? एक बार नहीं दो बार बैठेंगे !' और... माननीय नंदाजी ने पंडित जवाहर लाल नेहरू की मृत्यु के बाद एक बार एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद जनवरी 1966 में दोबारा कार्यवाहक प्रधानमंत्री के रूप में देश की बागडोर संभाली। प.पू. काकाजी महाराज के मुख से यह प्रसंग कई बार सुना है.....

पिछले दिनों ही देश ने इस महान स्वाधीनता सेनानी के शतायु होने पर उनका अभिनंदन किया था। और..... राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने अपनी सेवानिवृत्ति के दिवस पर इन्हें **'भारत रत्न'** के सर्वोच्च पुरस्कार से

सम्मानित किए जाने की घोषणा भी करी है। श्री नंदाजी जैसी ऊँची हैसियत की कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति को यूं सम्मानित करके भारत सरकार ने एक सराहनीय सत्कर्म किया है जो कि समग्र स्वामिनारायण संप्रदाय के लिए भी एक गौरव का विषय है....

यूं, यह बात भी एक मिसालरूप बन जाती है कि **राजनीति में धर्म का स्थान होना खूब जरूरी है**..... हम सभी जानते हैं कि छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन में स्वामी रामदास का महत्वपूर्ण स्थान था.... स्वयं भगवान रामचन्द्रजी ने भी गुरु वशिष्ठ को आगे रखकर ही राज्य चलाया और इसी कारण इन सभी ने राजकीय कार्यों में सफलता प्राप्त की.... **आज भी यदि राजकर्ता राजनीति में सच्चे संत को आगे रख कर चलें तो भारत का भविष्य खूब उज्जवल होगा ही** और दिन-रात चार चौगुनी प्रगति को पायेगा... तो **आईये, हम प्रार्थना रखें कि भारत की वैदिक संस्कृति, सभ्यता, धार्मिकता को बनाये रखने हम सही अर्थ में आज़ादी की अर्धशताब्दी का उत्सव मनायें और ईर्ष्या व संकुचितता छोड़ कर एक नई क्षितिज खोलें**.....

★★★

# रक्षाबन्धन.....

रक्षाबन्धन का पवित्र त्यौहार **18 अगस्त** को आ रहा है..... हिन्दुधर्म में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण पर्व है। जगत में बहन भाई को राखी बांधती हैं और गुणातीत समाज में इस दिन पुरुष वर्ग सन्तों के पास व बहनें बहनों से राखी बंधवा कर सर्व प्रकार से रक्षा होने की प्रार्थना करके निश्चिंततारूपी उपहार प्राप्त करते हैं.....

श्रीजी महाराज की सर्वजीवहितावह शिक्षापत्री उनके आश्रितों के लिए सुदर्शन चक्र है.... शिक्षापत्री के मुताबिक जीने वाले को व्यावहारिक कोई प्रश्न रह ही नहीं सकता..... साथ ही आध्यात्मिक जीवन जीने की सूझ अपने आप मिलती है। फलस्वरूप जीवन में एक निश्चिंतता, निर्भयता, मिठास अपने आप रहती है..... और हम तो प्रगट के उपासक हैं ! सो, मन-बुद्धि के बंधनों से छूटने के लिए भगवदी और भगवत्स्वरूप संत के पास सरल रहेंगे तो हमारी हर प्रकार से रक्षा होगी ही....

1973 में रक्षाबन्धन निमित्त भेजे सद्विचार में प.पू. काकाजी महाराज ने हम सभी को सच्ची व स्पष्ट आध्यात्मिक सूझ देकर बड़े संत को राजी करके रक्षा पाने के उपाय बताये। आईये, दिल की सच्चाई से इसे अपने जीवन में उतार कर **सच्चा रक्षाबन्धन** मनायें.....

'**सत्संग** बहुत करते हैं.... हकीकत वही की वही है, शब्द वही के वही हैं, भगवान वही के वही हैं, संत भी वही के वही हैं और हम भी.... वही के वही–वैसे के वैसे हैं। लेकिन, जिसे समझौते से मिलजुल कर काम लेना आया और जिसने ऐसे अतिशय बड़े पुरुष को प्रसन्न कर लिया, उसे सरलता से प्रभु का साक्षात्कार हो गया ! अब, हम इन संतों की ओर निगाह रखेंगे, उनके गुणों की जुगाली करेंगे, ऐन मौके पर उनके अपनाये अभिगम और वर्तन पर ध्यान देंगे तथा आज्ञा में जितने शुद्धभाव से वर्तेंगे उतनी सरलता रहेगी और तब उनकी कृपा दृष्टि से सब कुछ होगा। उनकी कृपा दृष्टि से जो होता है वह पक्की तरह होता है। दोष भी जो उनकी दृष्टि से टलेंगे वे हमेशा के लिए टल जाएंगे–उसमें कोई कसर नहीं रहेगी। उसके बिना तो अपने आपको कितने ही दोष टले जैसे लगेंगे, पर वे टले नहीं होंगे। कठिन हालात में या ऐसे प्रसंग पर वे (दोष) फूट आयेंगे–तब ख्याल पड़ेगा।

सो, हमें तो अब किसी भी तरह उनकी दृष्टि हम पर पड़े, उसी के प्रयत्न किया करने हैं। पाने का कुछ भी बाकी नहीं रहा। आज्ञा पाल कर समझदारी से सुख लेने का बाकी रहा है। ऐसा सुख लेने–उनका स्वरूप पहचानने–उनकी सत्ता, सामर्थ्य, ऐश्वर्य और प्रताप–जैसा है वैसा समझने उनको प्रसन्न करना ही पड़े और उसके लिए विश्वास व श्रद्धा से उनकी आज्ञा पालनी ही पड़े। वर्ना तो भले कितना ही करेंगे, उसमें दूसरों को शायद अच्छा लगेगा, प्रशंसा-तारीफ व वाह-वाह भी होगी और हमें भी अच्छा लगेगा, लेकिन उससे ये पुरुष तो प्रसन्न नहीं ही होंगे। सो, किया-करा सब निरर्थक ही बनेगा !

तो, उन्हें राजी कर लेने का ही एक अनुसंधान रखें। उन्हें राजी करने संप, सुहृद्भाव रखना ही है....
उन्हें राजी करने दास का दास बनना ही है...
कथा, आरती, चेष्टा, सेवा स्वधर्म, नौकरी, व्यापार, व्यवहार, पढ़ाई–जो कुछ भी करना है वह केवल उन्हें राजी करने ही करना है।

यही एक तान रखें और आज्ञा में लग पड़ें व हमारी वह श्रद्धा–रोज़ लगती भूख की तरह नित्य नवीन रहे ऐसी प्रेरणा, ऐसा बुद्धियोग, स्वामिश्रीजी, पू. शास्त्रीजी महाराज, पू. स्वामी बापा और प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप दें–यही इस रक्षाबंधन के शुभदिन पर प्रार्थना–विनती.... व सच्चा स्वातंत्र्य–मुक्ति को हम सभी पायें यही भारत के यह स्वातंत्र्य दिन की अभिप्सा' !

**प.पू. काकाजी महाराज**
***15 अगस्त' 73***

★★★

# 'श्रवण, मनन और निदिध्यासन'

*[पिछली पत्रिका में 'अनिर्देश की गतिविधियों' के अंतर्गत 'अनिर्देश' में किए गए गत एक महीने के अनुष्ठान का विवरण दिया था.... एक महीने की कथावार्ता दौरान प.पू. गुरुजी ने 'ब्रह्मप्रवाह' पुस्तक में से प.पू. काकाजी द्वारा लिखे गए पत्रों के एक-एक शब्द खूब गहराई से, अनेक प्रकार के उदाहरण देकर–अत्यधिक विस्तारपूर्वक समझाये..... कई ब्रह्मसूत्र भी ऐसे दिए जो हमें व्यावहारिक व आध्यात्मिक समाधान के लिए अत्यधिक मददरूप हो सकते हैं। इसी भावना से प.पू. गुरुजी से सुने उन ब्रह्मसूत्रों का मनन व चिंतन करने हेतु उन्हें यहाँ **'श्रवण, मनन और निदिध्यासन'** नामक शीर्षक के अन्तर्गत प्रस्तुत कर रहे हैं.....]*

★ साधु का बड़प्पन एक्सेसिबल–आसानी से उसे पहुंच पाये–ऐसे रहने से है.....

★ हमारे भीतर कुछ ऐसी मलिन भावनाएं पड़ी हुई हैं; सो साधु के कहने पर निगाह नहीं रहती।

★ ऐसे भरोसे से धून्य करना कि मैं प्रार्थना कर रहा हूँ वह प्रभु जरूर सुनेंगे ही। हम कई बार धून्य तो करते हैं, पर भीतर में शंका रहती है कि भगवान सुनेंगे या नहीं.....

★ वच. जेतलपुर–3 में महाराज ने कहा है कि भगवान के भक्त को दुष्ट वासनाएं–हठ, मान, ईर्ष्या, असूया नहीं रखनी चाहिए। ऐसा भक्त भगवान के साथ में रहता हो फिर भी वो सुखी नहीं रहता। क्योंकि हर एक का दोष देख-देख कर वह भुनता रहता है। किसी की तारीफ होने पर अधजली लकड़ी की तरह सुलगता रहता है।

★ किसी साधु और किसी हरिभक्त के अभाव का संकल्प उठे तो ताली बजाकर ऊंचे स्वर में निर्लज होकर 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण'–ऐसा भजन करना कि वो विचार उठ ही ना पाए।

★ वचनामृत के पन्ने-पन्ने पर महाराज ने कहा है कि भक्तों के अभाव-अवगुण में मत जाओ। अगर भगवान के भक्तों की झंझट में नहीं जायेंगे, उनकी **महिमा से** सेवा करेंगे तो भगवान हमारे हृदय में निवास करके रहेंगे और दुष्ट वासनाएं भी अपने आप टलती जायेंगी। हमें छोड़नी भी नहीं पड़ेगी।

★ हमें सिर्फ भजन का ही बल लेना है। पर, शिकायत यह है कि–भजन करना शुरु करते हैं तो मन कहाँ से कहाँ भटक जाता है।

वच. लोया 6 में महाराज ने बताया है कि भजन करने बैठने पर समुद्र की लहरों की तरह संकल्प उठते हैं तब क्या उपाय लेना?

महाराज ने स्वयं ही उत्तर दिया कि–तब जोर-जोर से ऊंचे स्वर से भजन करना और बड़े सन्तों के नाम लेकर प्रार्थना करनी तो विचार टल जायेंगे.....

★ सेवक को हर संजोग में यह भरोसा पकड़े रखना चाहिए कि सत्पुरुष जो कर रहे हैं वो मेरे फेवर (हित) में ही करते होंगे.....

★ जिसे संत को हर एक बात की वजह बतानी पड़े कि यह मैं इसलिए कर रहा हूँ, वह सेवक के संबंध में कसर मानी जाये।

★ कार्डीनल प्रिन्सिपल्स–बुनियादी बातों को हम समझे नहीं होते, सो सत्संग में खोखलापन रहता है। खोखला सत्संग टिक नहीं पायेगा।

★ साधु केवल एक प्रभु का संबंध देखता है। हमारे स्वभाव-प्रकृति वो देखता ही नहीं। और..... स्वभाव-प्रकृति को पोसेगा भी नहीं। स्वभाव–प्रकृति पर तो वह डंस मारता ही रहेगा।

★ मान-अपमान में समभाव..... कई बार अपमान तो हम सहन कर जाते हैं, पर मान मिलने पर उसकी गुदगुदी ना हो। अपमान में तो फिर भी भगवान को कर्ताहर्ता मान लेते हैं पर, मान मिलने पर स्थिर रहना–वो कठिन है।

अपमान होने पर-भले ही हम रिएक्ट न करें, पर **भीतर में जो क्षोभ हो जाता है वो भी नहीं होना चाहिए।**

★ प्रगट की निष्ठा पक्की होनी चाहिए.....

प्रगट की निष्ठा यानि–क्या?

मुझे मिले हैं वे सदा दिव्य, साकार, सर्वोपरि, प्रगट हैं और

वे मेरे हैं। जो कुछ भी हुआ होगा–

पू. काकाजी ने करा होगा, होने दिया होगा,

उनकी निगाह के बाहर नहीं ही होगा।

हमें तो थोड़े-थोड़े दिनों में

ऐसा हो जाता है कि ऐसा क्यों हुआ?
या
साधु मेरे हैं या नहीं।
यहाँ फर्क पड़ जाता है।
प्रगट की पक्की निष्ठा हो तो-
भीतर में हमेशा एक ठण्डक रहेगी।

★ प.पू. काकाजी ने हमारे जीवन में आकर कैसे-कैसे लाड़ लड़ाये, प्रेम दिया-हमारी समस्याएँ हल करीं! कई निजी सूचन भी दिए। पर बदले में हमने उन्हें क्या दिया?

★ मान-अपमान, सुख-दुःख में समभाव तभी रह सकता है जब हमारी निष्ठा पक्की है।

★ चाहे कोई कितना भी अपमान करे पर फिर भी उसे हँसते हुए मुँह से बुलाये–
यह चीज कौन कर पायेगा?
जिसे सिर्फ एक ही निशान होगा कि-मुझे कुछ भी करके प.पू. काकाजी को राजी कर लेना है। पू. काकाजी का होकर जीना है।
हमें तो कोई ज़रा-सा टोकता है, तो उसके साथ बोलना ही बंद कर देते हैं।

★ कोई हमारा अपमान करे, हमारी उपेक्षा करे, हमारी बात गिने नहीं, हमारी बात को स्वीकार ना करे तो हमें चुभ जाता है। तुरन्त क्षोभ को पा जाते हैं।
पर, भीतर में चुभे तो भजन करना चाहिए कि अन्दर कुछ अहं भरा है सो चुभता है।

★ प.पू. काकाजी हमेशा बात करते थे–कोई तुम्हारा विरोध करे... हमेशा तुम्हारे विरोध में रहे–उसे हमेशा साथ में रखना-दिखावे के लिए नहीं, शो-शा बिज़नेस के लिए नहीं, रोष से भी नहीं।
दरअसल महाराज ने हमारे लिए वह एक ब्रेक रखी होती है कि हम अंट-शंट व्यवहार ना कर जायें।

★ साधु का प्रेम तो उसी सेवक को मिलता है जो किसी के प्रति गांठ नहीं रखता। किसी के प्रति चिढ़ नहीं रखता.... मन में किसी के प्रति का भावफेर नहीं रखता।

★ भगतजी महाराज को संस्था ने जब विमुख कर दिया और गुणातीतानंदस्वामी ने तीन दिन की बासी खिचड़ी खाने के लिए भेजी तब भी भगतजी को स्वामी के प्रति भी कोई गिला-शिकवा नहीं हुआ.....

★ हर कोई छटकार दे-रौफ जताये तब भी दिव्यभाव रखते–वो भगतजी ! पू. काकाजी शब्द इस्तेमाल करते थे–'अखंड दिव्यभाव रहे'–दिव्यभाव खंडित ही ना हो। हमें दिव्यभाव तो रहता है, पर जब कुछ गड़बड़ हो जाती है तब वह खंडित हो जाता है.....

★ हमारा कोई आकार ही नहीं.... स्वरूप का ही आकार-उसका ही आकार सही, उसका ही आकार सत्य..... वो उसको साकार माना !

★ भीतर से रो-रोकर यानि–आर्तहृदय से भजन करते रहेंगे तो ये सारी चीज़ें पिघल कर कब निकल जायेंगी–पता भी नहीं चलेगा।

★ सबसे अधिक अक्ल वाला वो–जो भगवत्स्वरूप का बल लेकर ही जीए। अर्जुन ने सारा महाभारत का युद्ध किया..... कितना खून खराबा करा? पर, उसे पक्का था कि मैंने कृष्ण को आगे रखकर किया है, तो आखिर तक अर्जुन को मन में क्षोभ, बेचैनी, उदासी, विक्षेप नहीं रहा।

★ जो कुछ भी होता हो, यहाँ तक कि साधु बिल्कुल हमारे विरुद्ध भी जाता दिखाई पड़े। तब भी वे मेरे हित में ही कर रहे हैं.... यह हर संजोगों में मानना चाहिए।

★ 1955 से आज तक मैंने प.पू. काकाजी का कोई केस बिगड़ा हुआ नहीं देखा, क्योंकि–उन्होंने बुनियादी चीज़ों को कभी छोड़ा नहीं।

★ कुछ भी बड़ा निर्णय लेना हो तो दो जने मिल कर ही लें.... तो हम भूल नहीं कर पायेंगे.....

★ पू. पप्पाजी कहते हैं–we are in the hands of best surgeon.

★ रात को जब-जब जग जायें तब पलभर तो भजन कर ही लेना। जब भी आँख खुल जाये तो समझना कि दरअसल तो हमारी नींद पूरी हो गई है। सो बैठ कर भजन कर लेना ही।

★ हमारे प्रेरक प्रगट स्वरूप बन जायें। पल-पल क्या करना वो सुझाव प.पू. काकाजी देते जायें। ऐसा महामानव का समाज प.पू. काकाजी तैयार करना चाहते हैं.....

★ सबसे पहले भगवान की मूर्ति सिद्ध कर लेनी है, बाकी सब बाद में होता रहेगा.....

★ हमें सिर्फ दिल की सच्चाई से माँगना है कि हे काकाजी !

हमसे होता नहीं, पर आप करा दो-आप करा दो.... तो वे करा ही देंगे....

★ हम सोचे तो सही कि बापा ने–काकाजी ने हमें किस हेतू दीक्षा दी–हमें गोद लिया? **आज हम कितने बेवफा हो गये कि उस दिशा की ओर हमारी नजर ही नहीं।**

★ हर एक के लिए–आध्यात्मिक विकास के लिए एक पॉईन्टर महाराज ने रखा होता है। जहाँ हमारा मशीन हिल ही जायेगा.... पर उस समय धून्य करें कि–हे महाराज ! मैं इसे आपका स्वरूप मानकर उसे देखूं तो हमारी प्रगति जल्दी होगी.....

★ ★ ★

# 'अनिर्देश की गतिविधियाँ'.....

★ 3 जुलाई' 97 को फ्रंटियर मेल से दिल्ली व पंजाब के करीब 40 मुक्तों के साथ प.पू. गुरुजी ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के लाडले मानसपुत्र **पू. वशीभाई के जन्मदिन** निमित्त मुंबई जाने के लिए रवाना हुए..... ट्रेन में सभी को आनन्द करवाते हुए 4 जुलाई' 97 की सुबह 6.00 बजे मुंबई सेन्ट्रल स्टेशन उतर कर सभी सीधे **आत्मीयता की गंगोत्री** तीर्थ स्थान **ताड़देव** के दर्शन करने गए..... वहाँ प.पू. गुरुजी का पुष्प के गलीचे से ताड़देव के भाईयों ने स्वागत किया। सभी ने वहां धून्य करी। धून्य के पश्चात् सभी अपने-अपने ठहरने के स्थान पर चले गए।

4 जुलाई की दोपहर को पांजरापोल तीसरी गली की धर्मशाला में दशरथ परिवार, प.भ. कनुभाई एवं ताड़देव के मुक्तों ने मिलकर सभी के ठहरने की व्यवस्था करी थी। वहीं सभी ने प्रसाद लिया..... दोपहर को शॉपिंग वगैरह करने के बाद रात को भी वहीं धर्मशाला में ही सभी ने प्रसाद लिया.....

5 जुलाई की सुबह सभी 'पवाई' जाने रवाना हुए..... दोपहर को 'पवाई' मंदिर की जगह पहुँचकर सभी ने प.पू. काकाजी महाराज की प्रासादिक चीजों का दर्शन एवं पू. कांतिकाका की समाधि पर परिक्रमा करके वहीं प्रसाद लिया और वहीं से ठहरने के स्थानों पर चले गए..... शाम को सभी 'पवाई' बगीचे के हॉल में सत्संग शिविर के लिए एकत्रित हुए।

यूं दो दिन यहाँ सुबह-शाम सत्संग शिविर का सभी ने लाभ लिया और.... 7 जुलाई को पू. वशीभाई का जन्मदिन तो था ही व साथ ही **प.भ. ओमप्रकाश अग्रवालजी** की शादी की सालगिरह भी थी। अतः 7 जुलाई की दोपहर को प.पू. गुरुजी, दिल्ली व पंजाब मंडल तथा ताड़देव के योगेश्वर–पवाई की बहनें व सभी उनके घर प्रसाद लेने गये... प.भ. ओमप्रकाशजी व परिवार की खुशी का तो ठिकाना ही नहीं रहा। खूब भाव से उन्होंने संतों, बहनों, युवकों-हरिभक्तों को भोजन करवाया.....

शाम को भक्त समुदाय पू. वशीभाई का जन्मदिन मनाने इकट्ठा हो गया..... जब से हम मुंबई पहुंचे तब से ही इन्द्रदेव खूब मेहरबान थे। लेकिन आज तो वे इस साल के गुणातीत समाज के सारे उत्सवों की तरह हाज़िरी देने पूरे बैंड-बाजे के साथ आ पहुँचे थे। फिर भी सभी श्रद्धा व प्रेम के वश दूर जगहों से भी आ गये....

**पवाई इतनी अधिक दूरी पर होते हुए भी,**
**वर्किंग डे होते हुए भी,**
**मूसलाधार बारिश के कारण ट्रेफिक जाम होते हुए भी करीब 500-600 मुक्तों के आत्मीय समाज के इस उत्सव में पहुंचने से ताड़देव के योगेश्वरों ने प.पू. काकाजी की दिखाई राह पर चल कर अपने वर्तन द्वारा प.पू. काकाजी का जो परिचय दिया है, उसका यह स्पष्ट दर्शन है.....**

**प.पू. साहेब** भी उस दिन मुंबई में पू. गोरधनकाका की तबियत देखने आए हुए थे। सो, वे भी पू. वशीभाई के जन्मदिन निमित्त पवाई आ पहुंचे व **पू. ज्योति बहन** तो पहले से मौजूद थे ही। भजन-भक्ति से सभा की शुरुआत हुई..... वक्ताओं ने पू. वशीभाई के प्रति अपने उद्‌गार व्यक्त किए..... कईयों ने भजन के रूप में पू. वशीभाई का सम्मान किया। दिल्ली मंडल की ओर से प.पू. गुरुजी ने भी प.भ. राकेशभाई द्वारा एक अद्‌भुत भजन पू. वशीभाई की विशेषताओं पर प्रकाश डालता हुआ प्रस्तुत करवाया.... पू. वशीभाई के प्रति अपना प्रेम व्यक्त करने सभी ने उन्हें हार भी अर्पित किए.....

सभा में प.पू. साहेब ने पू. वशीभाई की विशेषता बताते हुए बात करी कि **वह तो 'भुल्का' (निर्दोष बालक) जैसा**

**है....** फिर प.पू. गुरुजी ने भी बातों में कहा ही कि—**वह काकाजी का बचूड़िया (निर्दोष बालक) है** और सभी ने जो भजन गाए थे उसमें भी कहीं ना कहीं बचूड़िया (निर्दोष बालक) या भुल्का (निर्दोष बालक) शब्द तो आता ही था। इससे भी अधिक पू. अरुणभाई और मंडल द्वारा किए सुशोभन में पीछे पर्दे पर भी प.पू. काकाजी की मूर्ति के साथ पू. वशीभाई के प्रतीकरूप एक भुल्के का कट आऊट रखा था !

8 जुलाई को सारा दिन प.पू. गुरुजी व सभी प्रोपर मुंबई में ही रहे.... शाम को गुरुजी सभी को गुरुहरि योगीजी महाराज व प.पू. काकाजी महाराज के प्रसादी स्थान 'नरीमान पाईंट' व 'गेटवे ऑफ इंडिया' ले गए और सभी से धून्य करवाई। वहां से ताड़देव वापिस आकर सभी ने प्रसाद लिया...

प.पू. गुरुजी के मुंबई रुकने दौरान प.भ. मल्कानी साहेब, प.भ. ओमप्रकाश अग्रवालजी, प.भ. पंकजभाई शाह, प.भ. अनुभाई के दामाद प.भ. पंकजभाई, प.भ. अनिलभाई, प.भ जस्मीन भाई, पानीपत वाले पुनीतजी के साढु प.भ. संजय अग्रवालजी व वडोदरा से आये प.भ. गिरीशभाई आदि ने अपनी गाड़ियाँ सेवा में तैनात करके आत्मीयता का तो दर्शन कराया ही—साथ ही प.पू. गुरुजी के प्रति का भक्तिभाव व प्रेम झलक रहा था.....

9 जुलाई की सुबह प.पू. गुरुजी व 12-13 मुक्त मुंबई से वापी जाने निकले और बाकी सभी पश्चिम एक्सप्रेस से दिल्ली लौटने निकल गए..... शाम पाँच बजे के करीब वापी प.भ. भाविनभाई की ससुराल **डॉ. रावल साहब** के घर पहुंचे..... खूब भाव से उन्होंने प.पू. गुरुजी का स्वागत किया.... वैसे प.पू. गुरुजी दोपहर का भोजन उनके यहाँ करने वाले थे, लेकिन देरी होने के कारण शाम करीब पांच बजे वहाँ पहुंचे। वहाँ पता चला कि डॉ. रावल साहब व पूरा परिवार प.पू. गुरुजी की राह देखते-देखते सुबह से शाम तक बिना कुछ खाए-पीए ही रहा... यह सुनकर प.पू. गुरुजी व सभी का दिल खूब गिलगिला हो गया.... प्रसाद लेकर प.पू. गुरुजी व सभी प.भ. ओमप्रकाश अग्रवालजी के साथ उनकी फैक्ट्री 'दमन' गए.... वहाँ धून्य-भजन करके वापिस 'वापी' आकर **प.भ. भरतभाई श्रोफ** के यहाँ पधरामनी करने गए..... रात को वहीं प्रसाद लेकर प.पू. गुरुजी व सभी मुक्त डॉ. रावल साहब के स्नेही मित्र प.भ. महेन्द्रभाई पटवारी के यहाँ रुकने गए.... कोई जान-पहचान ना होते हुए भी प.भ. महेन्द्रभाई व परिवार का भाव देखते ही बनता था... खूब भक्तिभाव से उन्होंने सभी के सोने की व्यवस्था करी हुई थी।

वापी में कई घरों में पधरामनी करते हुए 10 जुलाई की सुबह प.पू. गुरुजी व सभी वापी से सूरत जाने निकले.... दोपहर को **'धर्मपुर'** जहाँ पर श्रीजी महाराज कुशल कुवंरबा के महल में आए थे—उस प्रसादी के स्थान का दर्शन करके शाम को करीब पाँच बजे 'चिखली' में **प.भ. मणीभाई लाड** के यहाँ ठाकुरजी का थाल करा... वहां धून्य, भजन करके रात को करीब 9.00 बजे सूरत पहुंचे..... **सूरत** में पू. देवी बहन भट्ट के दामाद **प.भ. अमृतभाई वडिया** के यहाँ रात को सभी को रुकना था। प.भ. अमृतभाई का घर भले छोटा, लेकिन उनका दिल बहुत ही भक्तिभरा.... प.पू. गुरुजी के उनके घर ठहरने से पू. देवी बहन को तो प.पू. काकाजी के साथ की सारी पुरानी यादें ताज़ा हो गईं... सारे परिवार की खुशी का ठिकाना ही नहीं था... प.भ. अमृतभाई जो कि संदेश समाचार पत्र के चीफ़ रेसीडन्टल सम्पादक है, सो कभी भी छुट्टी नहीं लेते, लेकिन इस बार उन्होंने दो दिन लगातार छुट्टी करी और..... प.पू. गुरुजी के साथ-साथ रहे। साथ ही उनके पड़ोसी प.भ. पंकजभाई भट्ट ने भी उनको मददरूप होने ऑफिस से छुट्टी ली ! 11 जुलाई को दिल्ली के प.भ. एन.के. अग्रवाल जी के परम स्नेही मित्र **श्री आर.डी. देसाई साहब (सूरत म्यूनीसीपल कॉरपोरेशन के डाईरेक्टर ऑफ प्लानिंग)—** दफ्तर के कामों में खूब व्यस्त रहते होने के बावजूद सुबह ही आ गए और प.पू. गुरुजी व सभी के साथ अरदेशर कोतवाल जिन्हें श्रीजी महाराज ने प्रसन्न होकर अपनी पाघ दी थी, उस पाघ का दर्शन करने साथ गए। वहाँ सभी ने धून्य करी और प.पू. काकाजी महाराज के अमृतपर्व पर निकाले चांदी के दो सिक्के वहाँ अर्पण करे। पाघ का दर्शन करके सभी मुंबई वाले प.भ. गौतमभाई शाह के साढु साहेब **प.भ. हरिशभाई वखारिया** के घर गए.. वहां से प.पू. गुरुजी ने प.भ. देसाई साहब को जाने की आज्ञा दी... यूं आधे दिन तक देसाई साहब खूब व्यस्त होते हुए भी साथ रहे, जो कि सभी के दिल को बहुत स्पर्श कर गया.... प.भ. हरिशभाई के यहाँ नाश्ता करके फिर दोपहर को सभी **प.भ. एस. के. अग्रवालजी** के यहाँ ठाकुरजी का थाल धराने गए.... खूब भाव से प.भ. अग्रवालजी एवं परिवार ने संतों—हरिभक्तों की सेवा करी.... शाम को **प.भ. बल्लुभाई** के यहाँ पधरामनी करके प.पू. गुरुजी व सभी **गुणातीत ज्योत** में प्रसाद लेने गए.... ज्योत में रहते साधक

भाईयों के खूब आग्रह वश प.पू. गुरुजी व सभी रात को फिर वहीं रुक गए....

12 जुलाई की सुबह ज्योत में नाश्ता करके सभी वडोदरा जाने निकल पड़े क्योंकि वहीं से सभी को दिल्ली के लिए ट्रेन पकड़नी थी.... सूरत से वडोदरा जाते हुए रास्ते में भरुच में महाराज के समय के पू. आनंदस्वामी द्वारा बनाये मंदिर के दर्शन करते हुए सब वडोदरा पहुंचे। वडोदरा में **प.भ. दीपकभाई शाह** के यहाँ ठाकुरजी का भोग लगा कर **प.भ. जयेशभाई** के यहाँ सभी पहुंचे और..... रात की राजधानी से दिल्ली लौटने रवाना हुए.....

एक लम्बे अरसे के बाद प.पू. गुरुजी करीब 10 दिन के लिए दिल्ली मंदिर के मुक्तों-हरिभक्तों को छोड़कर गए थे..... पर यह बात भी सत्य है कि साधु का कार्य तो चैतन्य के विकास हेतू होता है। तो फिर—वह चाहे दिल्ली हो, मुंबई हो, वापी हो या चाहे सूरत हो... वह तो स्वतन्त्र विभूति-अनेरी विभूति-अक्षरधाम की विभूति है जो केवल अपने प्रभु के सिवा और किसी में बंधी हुई नहीं है, फिर भी जो उनके लिए जीवन जीने आए हैं—उनके आश्रित हैं उनके प्रति उन्हें एक अनोखी प्रीति भी है....

★ 20 जुलाई' 97—गुरुपूर्णिमा के दिन रविवार होने के कारण 'अनिर्देश' में सुबह 6:30 से 9:30 तक धून, भजन, सत्संग—समागम का कार्यक्रम रखा गया.... पिछले एक महीने की धून की तरह सभी हरिभक्त ठीक 6:30 बजे मंदिर के हॉल में इकट्ठे हो गए.... और करीब 7.00 बजे तक पाँच सौ से अधिक मुक्त 'गुरुपूजन' के लिए इकट्ठे हो चुके थे.... प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में सभी ने करीब आधा घंटा धून्य करी और धून्य के बाद प.भ. राकेशभाई, प.भ. ऋषिभाई, प.भ. दीपक शर्माजी इत्यादि ने 'गुरु' की महिमा दर्शाते भजन गाकर सभी को दिव्य आनन्द में डूबो दिया...

गुरुपूर्णिमा का अद्भुत रहस्य समझाने प.पू. गुरुजी ने 'ब्रह्मप्रवाह' में से प.पू. काकाजी द्वारा लिखे एक पत्र का निरुपण करते हुए कहा—

**'प्रगट की निष्ठा हमें प.पू. काकाजी ने पक्की कराई..... प.पू. काकाजी की देन.... कि हमसे भजन करवा-करवा के—खुद भजन कर करके स्वामिनारायण मंत्र हमें सिद्ध कराया... प्रगट को प्रत्यक्ष करने की करामात बताई... अर्जुन का कृष्ण मानवस्वरूप में था, तो उसके बाहरी व भीतरी कुरुक्षेत्र का अंत आया.... आज हर एक को टेनशन है। पू. काकाजी के पास जाकर बैठोगे तो आनन्द-आनन्द आयेगा... चाहे कैसे भी मूड में होंगे, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी की स्मृति में रहोगे तो आनंद-आनन्द रहेगा.....**

**..... भगवान को जो पल-पल कर्ता-हर्ता मान कर जीता है उसी ने सच्चा पूजन करा... प.पू. काकाजी कहते थे कि—आशीर्वाद तो देते हैं, पर तुम छाता लगा लेते हो.... हरिन्द्र दवे ने एक जगह लिखा है कि कृष्ण तो किसी को छोड़ते नहीं, पर तुम उससे हाथ छुड़ा कर चले जाओ तो वो क्या करे? पर—हमारे कृष्ण तो ऐसे हैं कि तब भी छोड़ेंगे नहीं...**

**भगवान, संत और सत्संगी शाश्वत हैं—भगवान और संत के साथ अपनी दिव्य एकता होनी जरूरी है.... आँख की पुतली में अगर भगवान की मूर्ति बस गई होगी तो वो सौन्दर्य ऐसा है कि दूसरा सौन्दर्य समुद्र के खारे पानी जैसा लगेगा....'**

प.पू. गुरुजी की कथावार्ता के बाद **प.भ. अजय मल्कानी** ने सभी की ओर से प.पू. गुरुजी का पूजन करके हार अर्पण किया। फिर सभी भाईयों ने प.पू. गुरुजी का पूजन करके जीवन की परम धन्यता मानी और प्रसाद लेकर गुरुपूर्णिमा की इन स्मृतियों को साथ लेकर विदा हुए.....

★★★

## व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 15.8.97 शुक्रवार — एकादशी, स्वातंत्र्य दिवस—भारत की आज़ादी की सुवर्ण जयंती
(2) दि.18.8.97 सोमवार — श्रावणी पूर्णिमा, राखी
(3) दि.25.8.97 सोमवार — जन्माष्टमी, व्रत

**PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI**
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Bharat Pakaging and Allied Industries** C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110064